वक्त आ गया है ख़ामोशी तोड़ें

जुही

वक्त आ गया है कि खामोशी तोड़ी जाए। परिवार के अंदर हो रही मनमानी बंद हो। इसके लिए जरूरी है कि सबसे पहले औरतें खामोशी तोड़ें। अपने घर में हो, चाहे पड़ौस में, ऐसी घटना के बारे में बात करें। ...याद रखें, इस बातचीत से घर की इज्ज़त दांव पर नहीं लग रही। जब घर में बच्चियों/औरतों पर यह अत्याचार हो रहा है तो हम कौन-सी इज्ज़त बचाने का दावा कर रहे हैं।

आपबीती एक

शमा एक ग़रीब परिवार में जन्मी। बाप मिल में चौकीदार, घर में दो छोटे भाई और एक बहन। शमा घरों में चौका बर्तन करती। परिवार के खर्चे में मदद करती। शमा की उम्र है सोलह वर्ष। कुछ दिन पहले शमा का बाप उसे बस्ती के डाक्टर के पास ले गया। पता चला शमा को सात माह का गर्भ है। बाप किसी भी कीमत पर गर्भ गिरवाना चाहता है। डाक्टर ने इंकार किया। मुहल्ले में बात फैल गई।

शमा अपने दोनों भाई बहन को चिपटाए रोती हुई कहती है। बच्चा मेरे बाप का है। बाप कहता है न जाने किसका पाप है। दस कोठी का काम है।

महिला समूह को खबर लगी। डराया-धमकाया। बाप फिर भी अपनी गलती मानने को तैयार नहीं था। मुहल्ले वालों ने उल्टे शमा को ताने दिए। भीड़ छंट गई। बाप ने रातों-रात शमा की शादी कर दी। पता नहीं अब शमा का क्या हाल है। पर हां, बाप खुले-आम सर उठाकर घूम रहा है।

आपबीती दो

मीना की मां बारह साल की मीना को उसके चाचा के पास छोड़ गई। शहर में बच्ची पढ़-लिख जाएगी। गांव में तो कुछ नहीं कर सकेगी। देवर प्राइवेट फर्म में मैनेजर था। उसकी अपनी बेटी भी मीना की उम्र की थी। कुछ माह बाद मां मीना को मिलने शहर आई। सब ठीक था। मीना खुश थी। मां देवर को हर महीने कुछ भेजती रहने का वादा करके चली गई।

कुछ महीनों बाद मां को मीना की चाची का ख़त मिला। फौरन चली आओ। चाची ने बताया

चाचा मीना और अपनी बेटी के साथ रोज बलात्कार करता है। चाची मना करती है तो उसे बुरी तरह मारता-पीटता है। घर की बात है, खामोश रहने के अलावा क्या कर सकते हैं। अब चाचा चाची को घर से निकालना चाहता है क्योंकि वह इन अन्याय कसा विरोध करती है। क्या करें?

आपबीती तीन

रोमी तीन साल की थी जब उसका भाई उसके सामने अपने सारे कपड़े उतारकर खड़ा होता था। वह सहम जाती थी। आठ साल तक यह सिलसिला चलता रहा। भाई मंत्रालय में उच्च पदाधिकारी है। खूब पैसा, इज्ज़त, रोब है। रोज रोमी को अपने साथ होटल ले जाता। अपने सहयोगियों के साथ मिलकर गंदी फिल्में देखता। शराब पीता। फिर सब मिलकर बलात्कार करते।

रोमी की भाभी को जब यह पता चला तो उसने अपने पति को रोका। जब वह नहीं माना तो उसने खामोशी तोड़ी। पुलिस में रपट लिखवाई। नाते-रिश्तेदारों से मदद मांगी। महिला समूह की मदद से पति को बंद करा दिया।

मुकदमे का फैसला होना अभी बाकी है। क्या होगा पता नहीं। पर कम से कम एक वहशी के खिलाफ़ आवाज़ तो उठी।

'मिथक' टूटे

इन तीनों आपबीतियों से 'सुरक्षित' परिवारों के अंदर होने वाली ज्यादतियों का पता चलता है। साथ ही कुछ 'मिथक' भी टूटते हैं।

— परिवार में यौन हिंसा सिर्फ़ निम्न वर्ग में नहीं हैं।
— यह न तो कोई मानसिक बीमारी है, न ही विकृत मानसिकता का नतीज़ा।
— यह अनपढ़-गरीब के अलावा, मध्यम और उच्च वर्ग में आम बात है।

आज खुलकर इन सवालों पर हर जगह चर्चा हो रही है। औरतों को एहसास हो रहा है कि जोर-जबरदस्ती सहना उनकी फितरत नहीं है। वे इंसान हैं और उन्हें अपने ऊपर होने वाली हिंसा का डटकर विरोध करना होगा। आंकड़ों से हमें पता चलता है कि ऐसे बलात्कारी पढ़े-लिखे, गरीब-अमीर, इंजीनियर, अफ्सर कुछ भी हो सकते हैं। ये पागल नहीं होते। ये हमारे आसपास घर के भीतर रहने वालों में ही छुपे होते हैं।

यह पितृसत्तात्मक ढांचे के अंदर होने वाला एक और अत्याचार है। औरत को शारीरिक ताकत से अपने वश में करना। अपनी सत्ता का प्रदर्शन करना। यह ऐसा करने का तरीका मात्र है। बलात्कारी ऐसा करके अपनी ताकत दिखाता है और उसका दुरुपयोग कर अपनी मनमानी करता है।

खामोशी क्यों?

सवाल यह उठता है इस विषय पर समाज चुप्पी क्यों साधे है। इस पर से पर्दा उठाने की

जिम्मेदारी सिर्फ औरतों-बच्चियों पर ही क्यों? क्यों घरेलू मामला कहकर इसे दबाया जाता है।

जवाब है क्योंकि परिवार पितृसत्ता के ढांचे का मुख्य स्तंभ है। इसी से पितृसत्ता पनपती है। और पुरुष अपनी इस सत्ता को नहीं छोड़ना चाहते। घर की औरतें अपनी मजबूरी के कारण चुप रहती हैं। अगर कुछ बोलतीं हैं तो उन्हें चुप करा दिया जाता है। पर अधिकांश समय औरत/लड़की इसलिए खामोश रहती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि कोई उनका ऐतबार नहीं करेगा। अदालत, पुलिस कोई उनकी मदद को नहीं आएगा। और ऐसा ही होता है।

अब वक्त आ गया है कि खामोशी तोड़ी जाए। परिवार के अंदर हो रही मनमानी बंद हो। इसके लिए जरूरी है कि सबसे पहले औरतें खामोशी तोड़ें। अपने घर में हो, चाहे पड़ौस में, ऐसी घटना के बारे में बात करें। अगर कोई बच्ची इस बारे में बोलती है तो उसकी बात सुनें। उसे सहारा दें। उसे चुप न कराएं। स्कूलों और घरों में ऐसा माहौल बनाएं जहां पारिवारिक हिंसा की बात हो सके। ऐतबार करना सीखें।

याद रखें, इस बातचीत से घर की इज्ज़त दांव पर नहीं लग रही। और फिर जब घर में बच्चियों/औरतों पर यह अत्याचार हो रहा है तो फिर हम कौन-सी इज्ज़त बचाने का दावा कर रहे हैं? □